हिन्दी का अन्तरराष्ट्रीय भविष्य एवं लोकप्रियता

प्रो0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

शोध सारांश

भूमण्डलीयकरण के आवेग के मध्य राष्ट्रभाषा को गौरवान्वित करने की जितनी आवश्यकता है उतनी ही विश्व मंच पर हिन्दी को समष्टिगत व्यक्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित करने का दायित्व भी हमारा है। इक्सीसवीं सदी में कार्य व्यवहार एवं राष्ट्रीयता में हिन्दी भाषा का प्रसार एवं प्रचार करने में प्रवासी भारतीयों का विशेष योगदान हो रहा है। वैश्विक परिदृश्य में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय चेतना के साथ हिन्दी भाषा की भविष्यगत सम्भावनाओं के मूल्यांकन में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को आत्मसात् करना अनिवार्य होता प्रतीत होता है। हिन्दी के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के लिए आवश्यकता इस बात की भी है। समस्त भारतीय जो विदेशों में रहकर भाषिक साधना के साथ सक्रियता के साथ चुनौतियों के साथ अपनी राष्ट्रभाषा को पुष्पित व पल्लिवित करने में लगे हुए हैं।

बीज शब्द– *हिन्दी का अन्तरराष्ट्रीय भविष्य, समृद्धि के मानदण्ड और लोकप्रियता।*

दुनिया की किसी भी भाषा का संबंध सामाजिक व्यवहार, ज्ञान की प्रक्रिया और दैनिक जरूरतों से जुड़ा होता है। हम जिस दुनिया में आज रहते हैं, वह संचार के माध्यम से पहले की अपेक्षा अधिक सरल हुई है। विश्व के देशों में विचार और प्रौद्योगिकी का परस्पर प्रभाव इतना त्वरित कभी नहीं था, जितना आज हुआ है। विचार और प्रौद्योगिकी से भाषा का घनिष्ठ संबंध है। जो समाज विचार और प्रौद्योगिकी का विकास करता है, उसकी भाषा प्रमुखता पाती है, जो समाज उनका आयात करता है, उसकी भाषा पीछे जाती है। इस दृष्टि से हिन्दी एक दुविधा में फंसी हुई भाषा है। एक तरफ हिन्दी का भारत में सत्तर करोड़ से अधिक आबादी का बाजार, दूसरी तरफ ज्ञान और विज्ञान में विकसित देशों पर निर्भरता, इससे अगर संभावना का द्वार खुलता है, तो समस्या का भी पता चलता है। यह देखने की बात है कि उदारीकरण के बाद शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं का स्थान घटा है, हिन्दी इसका अपवाद नहीं है। इसका मतलब यह है कि आर्थिक नीति से शिक्षा का और शिक्षा से भाषा का संबंध है। हिन्दी की ताकत यह है कि फिल्म हो या राजनीति, अखिल भारतीय महत्व उसके बिना नहीं मिलता; हिन्दी की विडम्बना यह है कि व्यवसाय और प्रशासन में सर्वोच्च स्थान हिन्दी वाले को नहीं मिलता। भारत के किसी भी हिस्से में अंग्रेजी का प्रभुत्व ज्यों–का–त्यों कायम है। तमिल हो या बंगाली, उन्हें हिन्दीं से कोई खतरा नहीं है,उनके प्रदेशों में अंग्रेजी के कारण उनकी भाषाएँ पिछड़ती हैं, लेकिन वे विरोध हिन्दी का करते हैं। इसी प्रकार, हिन्दी प्रदेश के युवकों की समस्या तमिल या नगा भाषा नहीं है, लेकिन यह अहिन्दी भाषियों के प्रति जैसा पूर्वाग्रह दिखाई देता है, वैसा अंग्रेजीं के प्रति नहीं। इन कुसंस्कारों को संकीर्णता की राजनीति प्रोत्साहन या संरक्षण देती है। जातीय और सांस्कृतिक प्रश्न

से भाषा का प्रश्न अटूट रूप से जुड़ा है, इसमें संदेह नहीं।

मातृभाषा का अपना एक महत्व होता है और इस तथ्य को संसार में कोई भी अस्वीकार नहीं कर सकता। जितनी उत्तम तथा मौलिक भावाभिव्यक्ति सरलता के साथ मातृभाषा में सम्भव है उतनी किसी भी सीखी हुई भाषा में सम्भव नहीं है। मातृभाषा के महत्व को प्रारम्भ से ही स्वीकार किया जाने लगा था। मैथिल कोकिल विद्यापति ने अपनी रचना 'कीर्तिलता' अवहट्ठ भाषा में लिखी और अपनी इस रचना के प्रथम पल्लव में मातृभाषा की प्रशंसा में लिखा–सक्कअ वाणी बहुअ न भावइ, पाउअ रस को मम्म न पावइ,देसल बयणा सब जन मिट्ठा, तें तैंसन जम्पओ अवहट्ठा।हिन्दी के पहले कवि माने जाने वाले अमीर खुसरो ने भी अपनी भाषा के महत्व को माना और कहा–तुर्क हिन्दुस्तानियम मन हिन्दवी गोयम जवाब,शक्र मिस्री नादेरम कज़ अरब गोयम सुखन। मैं हिन्दुस्तानी तुर्क हूँ जो हिन्दवी में बातें करता है, मेरे पास मिस्र की शक्कर नहीं जो अरबी में बातें कर सकूँ। आधुनिक हिन्दी के प्रसिद्ध कवि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी मातृभाषा के महत्व को माना और सन् 1877 ई0 में हिन्दीवर्द्धिनी सभा में दिये गये व्याख्यान में निजभाषा की उन्नति पर बल देते हुये कहा–निजभाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।बिनु निजभाषा ज्ञान के मिटै न हिय को सूल।।

ऐतिहासिक प्रतिबद्धताओं की वजह कहें या क्षुद्र राजनीति का कुचक्र लेकिन हमने मातृभाषा के प्रश्न को कभी गम्भीरता से माना नहीं। प्राचीन भारत में भारतीय भाषाओं पर आधारित वैदिक और बौद्ध शिक्षा–प्रणाली प्रचलित थी। भारत में इस्लामिक शासकों द्वारा किसी भी भारतीय भाषा के स्थान पर अरबी–फारसी और बाद में जन्मीं उर्दू को सरकारी कामकाज की भाषा और शिक्षा का माध्यम बनाया गया। अँग्रेजों ने भी भाषा के महत्व को समझते हुये अँग्रेजी को सरकारी कामकाज की भाषा और शिक्षा का माध्यम बनाया। किन्तु स्वाधीनता के बाद हमने पुनः भारतीय भाषाओं को उचित स्थान नहीं दिया। आज भी भारत में अधिकतर संरक्षकों को अपने बच्चों द्वारा अपनी भाषा में नहीं अपितु अँग्रेजी भाषा के माध्यम से अध्ययन करवाना अच्छा माना जाता है। भले ही इस स्थिति में विद्यार्थियों को दुगनी मेहनत करनी होती है। उन्हें विषय भी सीखना होता है साथ ही साथ उस विषय की अँग्रेजी भी सीखनी होती है। इसके साथ ही इस व्यवस्था का एक बड़ा दोष यह भी है कि उन सरल हृदय में अपनी भाषाओं के प्रति हीन भावना भी जागरित हो जाती है और भाषा के प्रति हीनता की यह भावना कहीं न कहीं संस्कृति को भी आघात पहुँचाती है।

अनेक कमियों एवं खामियों के वाबजूद भारत की निरन्तर विकाशमान अन्तर्राष्ट्रीय हैसियत और अब एक व्यावसायिक पहचान भी हिन्दी को एक वृहत्तर भूमिका से सम्बद्ध कर विश्व मंच प्रदान कर रही है। हिन्दी विश्व के प्रायः अधिकतर महत्वपूर्ण देशों के विश्वविद्यालयों में अध्ययन–अध्यापन में भागीदारी निभा रही है। अकेले अमेरिका में ही लगभग एक सौ पचास से ज्यादा शैक्षणिक संस्थानों में हिन्दी का पठन–पाठन हो रहा है। आज जब इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण के दबावों के चलते विश्व की अनेक संस्कृतियाँ एवं भाषाएँ आदान–प्रदान व संवाद की प्रक्रिया से गुजर रही है तो हिन्दी इस दिशा में विश्व मनुष्यता को निकट लाने के लिए सेतु का कार्य कर सकती है। उसके पास पहले से ही बहुसांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय रहने का अनुभव है जिससे वह अपेक्षाकृति ज्यादा रचनात्मक भूमिका निभाने की स्थिति में है। हिन्दी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुए हैं। उसने सदा–सर्वदा से विश्वमन को जोड़ा है। हिन्दी की मूल प्रकृति लोकतांत्रिक तथा रागात्मक सम्बन्ध निर्मित करने

की रही है। वह विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की ही राष्ट्र भाषा नहीं है, बल्कि पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, फिजी, मॉरीशस, गुयाना, त्रिनिदाद तथा सूरीनाम जैसे देशों की सम्पर्क भाषा है। वह भारतीय उप महाद्वीप के लोगों के बीच खाड़ी देशों, मध्य एशियाई देशों, रूस, समूचे यूरोप, कनाडा, अमेरिका तथा मैक्सिको जैसे प्रभावशाली देशों में रागात्मक जुड़ाव तथा विचार–विनिमय का सबल माध्यम है।

यदि निकट भविष्य बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था निर्मित होती है और संयुक्त राष्ट्र संघ का लोकतांत्रिक ढंग से विस्तार करते हुए भारत को स्थायी प्रतिनिधित्व मिलता है तो वह यथाशीघ्र इस शीर्ष विश्व संस्था की भाषा बन जायेगी। यदि ऐसा नहीं भी होता है तो भी वह बहुत शीघ्र वहाँ पहुंचेगी। वर्तमान समय भारत और हिन्दी के तीव्र एवं सर्वोन्मुखी विकास का प्रतिनिधित्व कर रहा है और यह सबसे यही अपेक्षा कर रहा है कि वह जहाँ भी है, जिस क्षेत्र में कार्यरत है वहाँ ईमानदारी से हिन्दी और देश के विकास में हाथ बटाएँ। सारांश यह है कि हिन्दी विश्व भाषा बनने की दिशा में उत्तरोत्तर अग्रसर होती जा रही है।

आज सम्पूर्ण विश्व जहाँ एक ओर इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक को समाप्त कर आगे बढ़ रहा है, वहीं दूसरी ओर वैश्विक फलक पर हिन्दी भाषा अपने नये तेवरों के साथ आगे बढ़ती जा रही है, चाहे उसका रूप एक प्रोडक्ट के रूप में ही क्यों न उभरा हो? विश्व स्तर पर हिन्दी का ब्राण्ड बनकर उसका यूज होना यह एक सराहनीय पहल है। भूमण्डलीकरण के दौर में हिन्दी अब भारत की राजभाषा या राष्ट्रभाषा नहीं, बल्कि आर्थिक मुनाफे के इस नये कलेवर को दृढ़ ढाँचे में राष्ट्रीय हितों को मजबूत कर सकता है। अब हिन्दी को जहाँ एक ओर अपने कैनवास को विस्तृत करने का मंच मिला है, वहीं दूसरी ओर तथाकथित साहित्यकार उसे भाषायी प्रदूषण का नाम देकर ह्रास मान रहे हैं; यानि कि हिन्दी का साहित्य के मानकों से दूर हटना। उसे तोड़ना–मरोड़ना, उसमें अन्य भाषाओं के शब्दों का समावेश होना, लोकभाषा के शब्दों का लोप होना, शैली को बिगाड़ना अनेक आरोपों के घेरे में है, लेकिन फिर भी हिन्दी अपने एक नये आकार को तो गढ़ ही रही है।

हिन्दी ने आज यह सिद्ध कर दिया है कि परिवर्तन के अनुरूप, परिवेश के अनुसार स्वयं को ढालकर अभिव्यक्ति को बहुआयामी रूप प्रदान करने में वह उत्तरोत्तर सक्षम सफल हो रही है। उसका कारण है कि हिन्दी की जो सबसे बड़ी शक्ति है, वह है उसकी असंख्य शब्द निर्माण की क्षमता व उसकी समन्वयात्मक प्रवृत्ति; जिसके कारण वह अनेकानेक अन्य भाषाओं को भी सहजता से आत्मसात् कर रही है। इसके सशक्त प्रमाण आज के विज्ञान को सरल करना भी है,जैसे –धुलाई को हीरो मैल को कर दे जीरो, इसमें 'हीरो' और 'जीरो' शब्द अंग्रेजी के हैं। सिर्फ अंग्रेजी के ही नहीं, अपितु हिन्दीत्तर भाषाएँ भी हिन्दी के साथ समन्वित हो रही हैं, जैसे–एयरटेल का विज्ञापन 'बड़की का ब्याह तय हो गया है, इसमें प्रयुक्त भोजपुरी शब्द भी हिन्दी के साथ मिलकर जनसामान्य तक पहुँच रहे हैं। उर्दू के शब्द जैसे – 'जिन्दगी के साथ भी, जिन्दगी के बाद भी' आदि प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिन्दी अब मात्र अंग्रेजी पर ही आश्रित नहीं रही, अपितु वह अनेकानेक अन्य भाषाओं को भी साथ लेकर चल रही है।

राजभाषा और राष्ट्रभाषा इन दोनों शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है सामान्य जन राष्ट्रभाषा और राजभाषा शब्दों में अन्तर को समझते नहीं है संवैधानिक रूप से हिन्दी राष्ट्रभाषा के साथ–साथ राज काज की भाषा अर्थात राजभाषा भी है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो भारत के स्वतंत्र होने के अनन्तर संविधान के अनुच्छेद 343/1 के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी 26 जनवरी 1950 के दिन संघ की

राजभाषा स्वीकार की गई परन्तु उसी के साथ अनुच्छेद 343/2 के अनुसार आगामी 15 वर्षों तक हिन्दी के साथ अंग्रेजी का प्रयोग पूर्ववत् चालू रहने का प्रावधान किया गया। इसी श्रृंखला में केन्दीय गृह मंत्रालय ने दो राजभाषा अधिनियम बनाए। राजभाषा अधिनियम की धारा 3/1 के अधीन हिन्दी के साथ अंग्रेजी को सहभाषा के रूप में प्रचलित रखने का प्रावधान किया गया। राजभाषा संशोधन अधिनियम के दिसम्बर 1967 में यह प्रतिश्रुति दी गई कि अहिन्दी भाषी राज्य सरकारें केन्द्र से पत्र व्यवहार में तब तक अंगेजी का प्रयोग जारी रख सकेंगी, जब तक इनमें से पहले हिन्दी में पत्र व्यवहार करना न चुन ले, इस प्रकार सरकारी उद्देश्यों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का ही प्रयोग जरूरी किया गया।

राजकाज में हिन्दी भाषा को सरल बनाने के लिए त्रिभाषा फॉर्मूला का सूत्र दिया गया। त्रिभाषा फार्मूले का अर्थ है कि बालक को हिन्दी, अंग्रेजी एवं राज्य की भाषा पढ़ाई जाए इसका अर्थ त्रिभाषा फामूले के अन्तर्गत हिन्दी में अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की जाए। उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव जी ने समस्त सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करने के जरूरी एवं कड़े आदेश दिए थे। इस प्रकार राष्ट्रभाषा हिन्दी की वर्तमान दशा का अति संवेदनशील विषय का प्रश्न न रहकर राजनीतिक प्रश्न बन गया है।

हिन्दी की स्थिति को लेकर समकालीन परिवेश में अनायास ही मैथिलीशरण गुप्त जी की पंक्तियाँ प्रस्फुटित होती है –हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी ? आज हिन्दी भाषा समुद्र बनने की तरफ अग्रसर हो रही है। हिन्दी भारतीय समाज की मातृभाषा, राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा है। अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर हिन्दी आज विश्व में एक समृद्ध एवं सम्प्रेषणीय भाषा के रूप में उभरकर सामने आ रही है। हिन्दी विश्व की समृद्ध भाषा होने के साथ–साथ सर्वाधिक वैज्ञानिक एवं अभिव्यक्तिपूर्ण भाषा है। सूचना प्रौद्योगिकी का सहारा लेकर हिन्दी अपनी जड़ें वैश्विक परिदृश्य में जमा रही है। आज भाारतीय सिनेमा जगत एवं इलेक्टॉनिक चैनलों को भी लगने लगा है कि हिन्दी के बिना उनको लोकप्रियता अर्जित नहीं होगी, इसी कारण उनका हिन्दी अनुवाद प्रसारित किया जाता है। विश्व के अनेक प्रमुख विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा की शिक्षा दी जाती है एवं विभिन्न देशों के विद्यार्थी भारत आकर भी हिन्दी भाषा की शिक्षा प्राप्त करते है।

14 सितम्बर 1949 ई0 को संवैधानिक रूप से हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। भारत के अनुच्छेद 343 में देवनागरी लिपि में हिन्दी को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। राज्य स्तर पर हिन्दी भाषा भारत के निम्नलिखित राज्यों की राजभाषा है– बिहार, झारखण्ड, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर–प्रदेश, छत्तीसगढ़, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली। हिन्दी भाषा का विस्तार भारत के विभिन्न राज्यों में तो है ही इसके साथ ही फिजी, मॅरिशस, गुयाना, सूरीनाम नेपाल और संयुक्त अरब अमीरात की जनता भी हिन्दी भाषा बोलती है। फरवरी 2019 ई0 में अबूधाबी में हिन्दी को न्यायालय की तीसरी भाषा के रूप में मान्यता मिली। फिजी, मॉरीशस, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद, टोबैगो एवं संयुक्त अरब अमीरात में हिन्दी को अल्पसंख्यक भाषा का दर्जा प्राप्त है। भारत को बेहतर ढंग से जानने के लिए विश्व के करीब सौ से अधिक शिक्षण संस्थानों में हिन्दी का अध्ययन–अध्यापन हो रहा है। अमेरिका के अनेक विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थानों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। ब्रिटेन की लंदन यूनिवर्सिटी, कैब्रिज और न्यूयार्क यूनिवर्सिटी में हिन्दी पढ़ाई जाती है। जर्मनी के 15 शिक्षण संस्थानों में हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन को अपनाया गया है। कई संगठनों के द्वारा हिन्दी का प्रचार किया जाता है। चीन में 1942 में हिन्दी अध्ययन शुरू

हुआ एवं 1957 में हिन्दी रचनाओं का चीनी में अनुवाद कार्य आरम्भ हुआ।मॉरीशस में हिन्दी की बोली भोजपुरी का बहुत विस्तार है एवं हिन्दी भाषा भी वहाँ के विभिन्न विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जाती है। विदेशों में अनेक पत्र पत्रिकाएँ लगभग नियमित रूप से हिन्दी में प्रकाशित हो रही है। यूएई के 'हम एफ–एफ' सहित अनेक देश हिन्दी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं जिनमें बीबीसी, जर्मनी के डायचेवले, जापान के एनएसके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिन्दी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इंटरनेट ने इस युग में हिन्दी को वैश्विक धाक जमाने में नया आयाम मुहैया कराया है। एक अध्ययन के मुताबिक हिन्दी सामग्री की खपत करीब 94 फीसदी तब बढ़ी है। हर दस में से दो व्यक्ति हिन्दी में इंटरनेट का प्रयोग करता है। फेसबुक, ट्विटर और वाट्सएप पर हिन्दी में यूनीकोड के माध्यम से लिख सकते हैं। इसके लिए गूगल हिन्दी इनपुट, लिपिक डॉट इन जैसे अनेक साफ्टवेयर और स्मार्टफोन एप्लीकेशन मौजूद है। हिन्दी–अंग्रेजी अनुवाद भी संभव है। हिन्दी जानने, बोलने और समझने वालों की बढ़ती संख्या के चलते अब विश्व भर की वेबसाइटस हिन्दी को भी तवज्जो दे रही हैं। ई–मेल, ई कॉमर्स, ई–बुक, इंटरनेट, एस0एम0एस0 एवं वेब जगत में हिन्दी को बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। माइक्रोसॉफ्ट, गूगल, आइबीएम तथा ओरेकल जैसी कंपनियाँ अत्यन्त व्यापक बाजार और अधिक मुनाफा एवं फायदे को देखते हुए हिन्दी प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं। हिन्दी भाषी लोगों के लिए पुणे के अनुराग गौड़ और उनके साथियों ने मूषक नामक सोशल नेटवर्किंग साइट बनाई है। इसमें ट्विटर के 140 शब्दों की सीमा की अपेक्षा शब्द सीमा 500 है। इसे इंटरनेट पर डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू डॉट मूषक डॉट इन पर खोजा जा सकता है। साथ ही गूगल प्ले स्टोर से भी डाउनलोड किया जा सकता है। इसमें किसी भी हिन्दी शब्द को रोमन में लिखने पर उसका हिन्दी विकल्प नीचे आ जाता है। इसे चुनकर हिन्दी में लिखा जा सकता है।

अब तक सम्पन्न हो चुके 11 विश्व हिन्दी सम्मेलनों के द्वारा भी हिन्दी का वैश्वीकरण किया गया है। 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन 18 से 20 अगस्त 2018 में मॉरिशस में किया गया। 11वे विश्व हिन्दी सम्मेलन के समापन सत्र में अपने विचार व्यक्त करते हुए विदेश मंत्री एम0 जे0 अकबर ने कहा कि–जब इतिहास बदलता है तब इतनी खामोशी से बदलता है कि इसकी आहट सुनाई नहीं देती, उसी प्रकार बहुत ही खामोशी से बढ़ते हुए हिन्दी आज विश्वभाषा बन गई है। अकबर साहब ने कहा हिन्दी का इतिहास ही नहीं बल्कि हिन्दी का भविष्य भी है। अतः इससे स्पष्ट है कि हिन्दी विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है।

हिन्दी को लेकर अक्सर दो तरह की बातें होती हैं। पहली तो यह कि अंग्रेजी के दबाव में हिन्दी का क्षरण हो रहा है। स्कूलों में शुरू से ही अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाई होती है, जिससे बच्चे हिन्दी लिखना–पढ़ना नहीं सीख पा रहे हैं। हिन्दी बोलना हीनता का लक्षण माना जाता है और हिन्दी बोलने वालों को दोयम, दर्जे का व्यवहार मिलता है। दूसरा पक्ष यह है कि हिन्दी का उत्तरोत्तर विस्तार एवं विकास हो रहा है। मनोरंजन और सूचना माध्यमों में हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार तेजी से बढ़ता दिख रहा है। हिन्दी टी. वी. चैनल सम्पूर्ण देश के साथ दुनिया के अन्य देशों छाए हुए हैं। विज्ञापन हिन्दी में बनाए जा रहे हैं। हिन्दी सिनेमा का बाजार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता को प्राप्त कर रहा है। बड़े–बड़े अंग्रेजीदां हिन्दी बोलने के लिए मजबूर हो रहे हैं हॉलाकि ये दोनों परस्पर विरोधी बातें दिखती हैं लेकिन विचित्र बात यह है कि दोनों ही में सच्चाई है। प्रधानमंत्री मा0 नरेन्द्र मोदी जी ने कहा है कि आने वाले वक्त में डिजिटल दुनिया में केवल तीन भाषायें अंग्रेजी ,हिन्दी और चीनी छाई रहेंगी।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने दूरसंचार और सूचना–प्रौद्योगिकी उद्योगों को हिन्दी भाषा के बाजार का विस्तार करने की सलाह दी। स्वयम प्रधानमंत्री मा0 नरेन्द्र मोदी जी की मातृभाषा गुजराती है लेकिन अगर वह देश दुनिया भर में लोकप्रिय और स्वीकार्य नेता बन गए हैं। इसमें उनके हिन्दी ज्ञान और हिन्दी में आकर्षक ढंग से और अधिकारपूर्वक भाषण देने का भी बड़ा योगदान है। भारत में कोई नेता हिन्दी जाने बिना राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान नहीं बना सकता। प्रधानमंत्री मा0नरेन्द्र मोदी जी की तरह देश के करोड़ों ऐसे लोगों ने जिंदगी के तमाम क्षेत्रों में हिन्दी सीखी है, जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है। इस मायने में सारे देश को जोड़ने और राष्ट्रव्यापी संवाद करने की भाषा सिर्फ हिंदी ही हो सकती है।

आज हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हो गई है। ऐसी भाषा होने के उपरान्त भी अपने ही देश में विज्ञान जैसे महत्त्वपूर्ण ज्ञानपरक विषयों के शिक्षण के लिए इसे उपयुक्त क्यूँ नहीं माना जाता ? कुछ निजी स्वार्थों के कारण कुछ लोग इसे देश में मातृभाषा मानने में हिचकिचाते हैं । भारत के अतिरिक्त अन्य देशों जैसे फिजी, मॉरिशस, गयाना की अधिकतर और नेपाल में 60 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं और इसी आधार पर हम हिंदी को अपने समस्त शिक्षण की माध्यम भाषा बना सकते हैं । हिंदी को सम्पूर्ण भारतवर्ष की भाषा बनाने से शिक्षण के साथ साथ सम्पूर्ण विकास की गति अबाधित बढ़ती रहेगी ।

ऐसा नही है कि वैश्वीकरण के प्रभाव से हिन्दी का विकास एकदम शून्य है 'वरन् हिन्दी का महत्व सिद्ध हुआ है' इस बात में भी सत्यता है जैसे– हिन्दी फिल्मों के माध्यम से हिन्दी विदेशों में फैल रही है। नेपाल, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैण्ड, फीजी, सूरीनाम, कनाडा, ट्रिनीडाड, इग्लैण्ड, संयुक्त राज्य अमेरिका में हिन्दी बोलने समझने, पढ़ने–खिलने वालों की संख्या काफी हुई है। समाजशास्त्रियों ने विश्व में हिन्दी को पहले स्थान पर दर्शाकर हिन्दी प्रेमियों का मन आश्वस्त किया है। मीडिया में हिन्दी ने अपना प्रभाव दर्शाया है पर अंग्रेजी का सहारा लेते हुए। हिन्दी चैनलों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हुई है तथा फेसबुक, ट्वीटर व अन्य सोशल साइट्स पर हिन्दी लिखने वालों की संख्या बढ़ी है। विदेशी दूरदर्शन चैनलों और स्वदेशी चैनलों में काम करने वालों पर लगातार यह दबाव बनाया जाता रहता है कि ऐसी हिन्दी बोलें जो ऑडियन्स की समझ में आये। कशमकस भले कुछ भी हो है क्योंकि वैश्वीकरण एक ही 'विश्व मानव' एक ही 'विश्व भाषा' एक ही 'विश्व संस्कृति' में आस्था जगाता है। हिन्दी की इस नई भूमण्डलीय चाल में अंग्रेजी के वर्चस्व का बोलबाला कम होता जा रहा है। इसमें बाजारवाद का भले ही दंभ है। पर हिन्दी के विस्तार की साम्राज्यवादी पहल आज भाषा समृद्धि के मानदण्डों से नियंत्रण और निर्धारण के खेल को स्वीकार कर रही है।

सन्दर्भ

1. राजभाषा हिन्दी–डॉ0 भोलानाथ तिवारी–प्रभात प्रकाशन, चावड़ी बाजार दिल्ली 110006, प्रथम संस्करण–1952
2. हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास–डॉ0 भोलानाथ तिवारी–ज्ञान भारती4/14 रूप नगर दिल्ली 110007, संस्करण–1986
3. हिन्दी भाषा का अन्तर्राष्ट्रीय सन्दर्भ–डॉ0 भोलानाथ तिवारी ,पांडुलिपि प्रकाशन 77/1 ईस्ट आज़ाद नगर, दिल्ली 110051, प्र.स. 1998
4. हिन्दी और हम–विद्यानिवास मिश्र–ग्रन्थ अकादमी, 1686, पुराना दरियागंज, नई दिल्ली 110002, प्र. स. 2001

5. भूगण्डीकरण, निजीकरण व हिन्दी–डॉ0 माणिक मृगेश–वाणी,प्रकाशन 21 ए दरियागंज,नई दिल्ली, 110002, प्र.सं. 2000
6. समन्वय का सूत्र : हिन्दी–डॉ0 मोटुरी सत्यनारायण, संस्कृति भवन, वाणगंगा ,भोपाल–462003
7. अरूण कुमार पाण्डेय, अपने ही घर में बेघर हिन्दी, राष्ट्रभाषा फरवरी, 2009, राष्ट्रभाषा, प्रचार समिति, वर्धा
8. देवेन्द्रनाथ शर्मा,राष्ट्र भाषा हिन्दी समस्याएँ और समाधान, लोक भारती प्रकाशन, पहली मंजिल, बरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहाबाद,संस्करण 2014
9. अनिता विजय ठक्कर, हिन्दी की प्रचार संस्थाएँ स्वरूप और इतिहास, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, 2009
10. ए वाकेबुलरी हिन्दुस्तानी एंड इंग्लिश (एडिनबरा), जे. बी. गिलक्रिस्ट उद्घष्त राष्ट्रभाषा की समस्या (प्रथम सं.), डॉ0 राम विलास शर्मा
11. अर्जुन तिवारी, हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास, वाणी प्रकाशन ,नई दिल्ली, 1997
12. भोलानाथ तिवारी, हिन्दी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004
13. पंकज बिष्ट, हिन्दी का पक्ष, वाग्देवी प्रकाशन, शिवबाड़ी रोड बीकानेर, संस्करण 2008